प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी

(ले०:—रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

* दोहा *

श्रीसीतावर पदुमपद, परम पराग प्रणम्य ।
प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी, वरणौं सुवच निशम्य ॥१॥
श्री समीरनन्दन सुचित, चन्दन चरण मनाय ।
श्री शंकरपद प्रणय करि, वरणौं सुगुणनिकाय ॥२॥
श्रीशारदा गणेश गुरु,गिरिजा सिय पिय प्रीति ।
सुजन सुमन वितरण कुशल,वंदौं वलित प्रतीति॥३॥
श्री सत्या सरयू नमो, वार वार सब सन्त ।
दीजै मुद मेधा सुधा, सम श्रद्धा सियकन्त ॥४॥
नाम धाम गुण भक्तिवर, बोध प्रकाशी रूप ।
करौं निरूपण रहसवर, शमन सकल श्रम धूप ॥५॥
मंगल मूल मनोज मद, मरदन प्रिय पति प्राण ।
सकृत शरण सुमिरत सुजन,करत त्रिगुण हरित्राण॥६
अमित अमंगल वन दहन, हेतु सवल सुख पुञ्ज ।
सीताराम सुनाम निज, निर्विकार छवि कुञ्ज ॥७॥
कलिमल मथन समर्थतर, अतर तरावन हार ।
पावनतर पावन करण, नाम वरण अविकार ॥८॥
संबल शुचि सुन्दर सरस, परम धाम हित हेरि ।
युगलानन्य सुनाम रति, मति मेरी करु नेरि ॥ ९ ॥
सपदि चहत जो परम पद, पारावार अनूप ।
ताहि उचित सुमिरण सतत,नाम ललाम स्वरूप॥१०

मुनि मन मानस हंस शुभ, कुञ्ज मंजु सुखराशि।
श्रुति पुटपरम पियूष सम,सार सकल गुणभासि॥११॥
वीज विशद भगवत् धरम, परम प्रेम रसकेत।
अमल विभूति विलाशप्रद,असद दमन झखकेत॥१२
भव सागर पर पार कर, आकर वस्तु विशेष।
परम प्रभाकर मोहतम, हरण अनूपम वेश॥१३॥
जीवन जरी सुधाभरी, मृतक जिआवनि जानु।
युगलानन्य उमंग उर, पूरण हारि प्रमाणु॥१४॥
अज अव्यक्त अनादि गुण, रहित अगोचर जौन।
नाम मनोहर मोद घन, सहज प्रकाशक लैन॥१५॥
अगुण सगुण कारण परम, किये विशेष विचार।
नाम निरूपण ते लखहिं, सज्जन सुमति उदार॥१६॥
गुणागार संसार तरु, प्रवल न विनशन योग।
तासु मूल हनिवे निमित, नाम सुशस्त्र अशोग॥१७॥
नाना मत शिव हेतु श्रुति, करत निरूपण जौन।
तेहि सबको कारण करण नाम सनेह अगौन॥१८॥
मधुर अमी मिष्टादि सब,स्वादु विनिंदन हार।
नाम सुधा चाखत सुजन,पावहिं प्रमुद अपार॥१९॥
आकर्षण हनुमान मन, शंकर सुमुनि समेत।
पाप पुञ्ज जिय सदन ते, उच्चारत जसकेत॥२०॥
वशीकरण गामी विदित, मारण मोह मनोज।
सुस्तम्भन चित वृत्ति को,करत हरत सब सोज॥२१॥
मोहन मति मन रसिक जन, विद्वेषण प्रतिकूल।
षट प्रयोग साधहिं सुजन, नाम मंत्र अनुकूल॥२२॥
ध्वज दक्षिणा दान विन, सुरश्चरण सुनुमीत।
देत परम फल जीह शुचि,परसत शमन पुनीत॥२३॥
नायक निज निर्वाण नग, अग जग रतन अमोल।
संत जौहरी हृदय हर, झलकत प्रभा अतोल॥२४॥
विमल वाग अनुराग रस, रितु बसंत रमणीय।
नेह सुभग सुरतरु अमल, फलकामद कमनीय॥२५॥
त्रिविध कठिनतर कर्मकटु, गांठि सहस शत फेरु।
खोलत नाम प्रताप पटु, विना प्रयास अदेरु॥२६॥
विमल बोध अविरोध सुख, सोध निरोध समस्त।
नाम मधुर रसना रटत, प्रगटत दमक दुरुस्त॥२७॥
सगुणा अगुण भक्ति द्वै, भाँति बखानहिं संत।
उभय होत नामहिं रमें, हृदय विवेक अनन्त॥२८॥
अखिल भावमय नाम निज,निरखहिं रसिक नरेश।
सहज उन्मुनी एक रस, ललित रहस्यावेश॥२९॥
राम नाम जापक हिये, भव क्यों व्यापक होय।
गाथा श्री प्रह्लाद ध्रुव, सुनिय सुखद मन मोय॥३०॥
शमन सकल रुज अमलतर, भेषज मन्त्र भवेश।
हे रसने रटनेह युत, सजि जिय दृढ़ आवेश॥३१॥
नामी नाम अभेद तऊ, नामी नाम अधीन।
समुझहिं गांस प्रकाश चित,अनुपम रहस प्रवीण॥३२
कोटि कलप तम पलक में,करत प्रभाकर नाश।
विना विलंब सुनाम गुण, ताते सहस प्रकाश॥३३॥
माया मोह महान निशि, नशत न लागत वार।
रटन चाहिए एक रस, अरस सनेह विसार॥३४॥
रसना रमत सजत सहज, प्रेमाभक्ति विलाश।
पुलकत तन हुलसत हिये, निज पर रूप प्रकाश॥३५॥
तिनहीं को गोचर रसिक, रूप ध्येय रस साज।
जिनके सियवर नाम मधि, प्रीति प्रतीति दराज॥३६
संत कंज वन सघन शुभ, सौरभ लगन निकेत।
तिन हित दिव्य दिनेश दुति,विग सावनसुख चेत॥३७॥
जापक चित्त चकोर रस, दायक चन्द अमन्द।
वरण विभव वल वशकरण,सच्चित आनन्दकंद॥३८
दिव्य देश दुर्गम अधिक, चित्त न पहुँच योगीश।
तेहि थल मोते मंदमति, रमवावत नामीश॥३९॥
नाम महा मुद प्रद कथा, को कवि करे बखान।
जिनकी कृपा कटाक्ष ते, सिंधु तरत पाषाण॥४०॥
मिटत न मन गुण कल्पना, कीने कोटि उपाय।
राम नाम जप सुरसरित,वीच नहाय विलाय॥४१॥

(क्रमशः)

प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी

(रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

गताङ्क ७ पृष्ठ १० से आगे

❀ दोहा ❀

कंटक कलित कठोर कलिकाल कुमारग नीत ।
अभय जान दै सुभग निज, नाम सुप्रीति प्रतीत॥४२॥
विषय विषम बाधा विविधि,वरधन मन चितचोर ।
ताहि निवारन अल अलख,नाम प्रभाव अथोर॥४३॥
बिना विचारे नाम गुन, बहु मतवाद विषाद ।
युगलानन्य सुनाम जपि, अन्तरंग अह्लाद ॥४४॥
युगलानन्य जहानसे, कहो सरे का काम ।
आखिर खेद खलल खतर, ताते भजु सियराम॥४५॥
विभव विचित्र प्रकाश कर, आकर रहस रसेश ।
चाकर सम साधन सकल, नाम प्रधान परेश ॥४६॥
दिव्य भव्य गुनगन अमल, नामी मध्य निरूप ।
नाम सांम वैसेहिं लखब, कछुक विशेष अनूप ॥४७॥
सतयुग ध्यान समान चित, त्रेता योग सुयज्ञ ।
द्वापर परिचर्य्या उभय, भांति बखानहिं विज्ञ ॥४ ॥
कलि कराल कारन कलुष, काम कोह कृत कोट ।
ऐसे समय न अपर कछु, गहु सुनाम जस ओट॥४६
नाम महारस पान करु, परिहरु काल गलानि ।
युगलानन्य सुनाम बल,करि न सके कलि हानि॥५०॥
चारिहु युगमधि नाम बल, तरहिं न संशय रंच ।
और युगन विच मिलित अब,केवल नाम अवंच॥५१
बड़भागी जिनके जिगर, जिकर नाम दिलदार ।
तिनकी को महिमा कहे, ते पूजित अविकार ॥५२॥
सब शुभ साधन समनि सह, भागे कलिहिं निहारि ।
खड़े रहे सनमुख अचल, नामी संत अगारि ॥५३॥
नाम परत्व प्रताप मन, श्रवन मनन करि रोज ।
पाइय प्रेम प्रकाश सुख, मिले न कलियुग खोज॥५४॥
याते इस युग जननको, समुचित नाम उचार ।
साधन अपर सुपीठि दै, सनमुख युग सरकार ॥५५॥
गाजत नाम प्रताप कलि,बाजत सुभ जस बम्ब ।
राजत छाजत सुजन हिय, दायक सुदुति कदंब॥५६॥
देखी सब करतूति की, रीति भली विधि खोजि ।
युगलानन्य सुनाम बिनु,सब सुख मरघट गोजि॥५७॥
नाम नदी शतरंगसे, संभव साधन सर्व ।
शीकर सम जहँ तहँ लसें, लखें सुसन्त अखर्व ॥५८॥
सुनिये नाम प्रताप तर, पर ते पर हिय धारि ।
रूप सुगुन संयुत सुखद,सहज स्वाद सुखकारि॥५९॥
जेते प्राकृत दिव्यतर, अनल सुतेज सुवास ।
तिन सबको कारन परम, नाम रकार प्रकास ॥६०॥
जपत रकार विकार बहु, विधि निषेध व्यवहार ।
भसम होत अविलंब अति,मन मनोज सविकार॥६१॥
मार्तंड दुति तरुन तर, अमित अंड प्रति जौन ।
श्रीश्रीनाम अकार को, किंचित अंश सु गौन ॥६२॥
महा मूल माया मिलित,मानस मधि तम तें म ।
व्यापक तीनों तनन बिच, शेष न कोई रोम ॥६३॥
तेहि वारन कारन सबल, वारन विशद विचारु ।
श्रुति सदग्रंथ अनूप सुख,प्रतिभासक अवधारु ॥६४॥
मधुर मकार मनोज वर, बीज विगत संदेह ।
ताप कलाप प्रशान्तकर, शीतल सुख संदोह ॥६५॥
अनल सुरवि निशिनाथसे, सकल चराचर मोद ।
सो सीतावर नामसे, संभव सुनत प्रमोद ॥६६॥
या प्रकार पावन विदित,प्रबल प्रताप सम्हारि ।
रटें नाम रसना रसिक, सकल उपाय विसारि॥६७॥

नाम प्रताप सुमति बिना, बसे न होत प्रमोद ।
युगलानन्य सुनाम जपु,सुनि सत सुधुनि सरोद॥६८॥
मन लयलीन विशेष सह, सुनिय स्वरूप अनूप ।
नामी नाम अभेद अति, श्रीशिव शिवा निरूप॥६९॥
रेफ अनूपम तेजमय, अकथ रशिक प्रिय नैन ।
कजरारे प्यारे परम, अनियारे रस ऐन ॥७०॥
अमित मित्र प्रतिकाश सद, सदन ब्रह्म पररूप ।
निराकार आभासको, कारन परम अनूप ॥७१॥
व्यापक अग जग जीव मधि, साखी अगुन अबाध ।
योगी जन मन ध्येय अति,गहर गँभीर अगाध॥७२॥
सियवर वदन विभात वर, वल्लभ सगुन अकार ।
कोटि काम कमनीयता, निवछावर बहु वार ॥७३॥
वासुदेव अविगति विमल, रूप वीज सुखकंद ।
ज्ञान सहित विज्ञान रस, ततपर भजहिं सुछंद ॥७४॥
मध्य अकार अधार रस, वक्षस्थल रघुलाल ।
रशिक सनेहिनके दृगन, सो लखि परत रसाल॥७५॥
महाविश्नु कारन अखिल, बिश्व विशेषाधार ।
वल वीरज वैभव वलित, परम प्रतापागार ॥७६॥
सिय वल्लभ कमनीय कटि, जानु युगल पदकंज ।
मध्य मकार अकार सुख, सागर रहस निकुञ्ज ॥७७॥
महाशंभु संभव सुजग, बीज बिचारु सु बोध ।
बिस्व विलय कारन जगत,सद्गुरु रूप विसोध॥७८॥
व्यंजन जौन मकार मधि, सो सियवर चितचाह ।
उभय भांति इच्छा कहें, सज्जन सुमति अदाह ॥७९॥
मूल प्रकृति कारन विशद, विन्दु जहान निदान ।
नाम स्वरूप सुबोध बिनु, जहँ तहँ फिरत भुलान॥८०
सीताराम स्वरूप श्री युगल वरन अभिराम ।
युगलानन्यशरन रटत, पाइय प्रभा ललाम ॥८१॥
व्यंजनसे छर संभवत, आदि अंत निर्द्धार ।
आतम ब्रह्म अकार ते, प्रगट सु अच्छर सार ॥८२॥
रेफ निरक्षर हेतु अरु, स्वयं निरक्षर पार ।
वाच्य अभेद विचार ते, समुझे सुमति अगार॥८३॥
चिदाकाश अवकाशमय, नाम प्रकाश विभास ।
बोध विशुद्ध सुसंत जन,जानहिं नाम विलास ॥८४॥
षट कल संयुत नाम निज, करहिं निरूपन संत ।
तासु स्वरूप अनूप अल, वरनो अकथ अनंत ॥८५॥
परं ब्रह्ममय रेफ वर, विशद विकार विहीन ।
निखिल नाद कारन अजय,जानु अकार प्रवीन॥८६
गुरु अकार स्वर शब्दमय,लखत चखत रस स्वाद ।
वेद व्याकरन को परम, कारन शमन विषाद ॥८७॥
मधुर मकार अकार वर, जीव समूह अधार ।
नित्य मुक्त जिज्ञासु तिमि, मुक्तवद्ध सुविचार ॥ ८॥
व्यंजन जौन मकार मधि, शेष रह्यो रमनीय ।
महा मूल माया प्रनव, हेतु अधिक कमनीय ॥८९॥
प्रथम अकार उकार करि, द्वितीय समेत आकार ।
वरन विपर्य्यय करि लखहु; याको भेद विहार॥९०॥
सुवरन सानि अकार मधि, मिलत अकार विचित्र ।
नाद मांझ सो लीन ह्वै, जात विचारहु मित्र ॥९१॥
व्यंजन जौन मकार वर, विन्दु होत अविकार ।
राजत प्रनव सुभाल पर, प्रवल परम प्रिय प्यार॥९२
सिद्ध दशा जब प्रनव की, तब परात्पर रेफ ।
अन्तर तासु समात सुठि, जैसे सुमन द्विरेफ ॥९३॥
याही विधि एकाक्षरहु, होत नाम ते सिद्ध ।
सोहं तत्त्वमसी सकल, महामंत्र अनविद्ध ॥९४॥
सप्त कोटि संख्या सहित, महामंत्र वद तंत्र ।
सो सबको कारन परम, राम सुनाम स्वतंत्र ॥९५॥
अष्टाक्षर पंचाक्षरहुँ, बीच विराजत नाम ।
राम रहित दोऊ अफल, समुझो संत सुधाम ॥९६॥
नाम सच्चिदानन्द है, निरखो नैन पसारि ।
चिद रकार सु अकार सत,मोद मकार विहारि॥९७॥
सउ साधन सुचि साध्य फल रूप सुनाम मंझार ।
युगलानन्यशरन रशिक परखे रहस उदार ॥९८॥

(क्रमशः)

प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी

(रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

(गतांक ८ पेज १४ से आगे)

❀ दोहा ❀

यद्यपि श्रीसिय नामहूँ, भिन्न न अर्थ विचारि ।
तद्यपि सीता सहित, श्रीराम भजो पन धारि ॥९९॥
सी सुवरन उच्चारि चित, पावत अविचल रंग ।
ता जपि मुद मङ्गल लहत,तारत करन कदंब ॥१००॥
सीता नाम अनूप मन, रसना सतत सुध्याव ।
श्रीसीतावर निकटता, अनायाशहीं पाव ॥१०१॥
सी सुमिरन से सुधा रस, स्वादी होत विशेष ।
ता जपि जीह त्रिगुन तरत,तरुन ताप तम देश॥१०२॥
सीता सरस सनेह युत, जपत सियावर आप ।
विवश होत तेहि सुजन वस, देत महा रस छाप॥१०३
सीता नाम ललाम मृदु, प्रथम उचारि सप्रेम ।
पुनि रामहिं रटि पाइये, परम प्रवरधित क्षेम॥१०४॥
अमित साधननको सुफल, नाम रटन निज जीह ।
सहित सनेह अकाम मन, जैसे स्वाति पपीह ॥१०५॥
भीदर वाहर भेद कछु, करव न सन्त सुजान ।
रटन चाहिये नाम सजि, सरसानन्द प्रधान ॥१०६॥
युगलानन्यशरन सुलभ, सकल साज सुख होय ।
जो जन जपे सनेह सनि,नाम त्रास वद खोय॥ ०७॥
मोह मनोज मुराद मद, मत्सर मान मलान ।
असतवचन तृस्नातरुनि,विविधि वासनाव्यान॥१०८
राग द्वेष दुर्जननको, संग कुरंग कुरोग ।
करन कदंब विजीति तिमि,तमगुन संभव शोग॥१०९
वाहर भीतर शुद्ध ह्वै, रटे नाम एकतार ।
युगलानन्य सपदि मिले,पर प्रभु प्रद सुखसार॥११०॥
कामादिक जीते विना, वदत न नामानंद ।
ताते तिनहिं विस दिये, लखि मग ठग सुविलंद॥१११
स्वल्प श्रमहि करि काटिये, काम कलुष कृतकर्म ।
युगलानन्य सुनाम जपि,वरधत भगवत धर्म ॥११२॥
नामाराधन करत नित, होत सही साकार ।
युगलानन्य सुनाम विनु, भटकत विपुल अगार॥११३
तारकेश श्रीनाम गुन, अपर वासना दाहि ।
युगलानन्य अयाश बिन, मिले रूप मनमाहि ॥११४॥
सब ग्रंथन सतसंग श्रुति, संवत केवल नाम ।
अपर सकल साधन वृथा, दायक क्लेशनिकाम॥११५
युगलानन्यशरन शतत, कीजे नाम अधार ।
सकल समय सुखमासदन,प्रीतम नाम उचार॥११६॥
मम मन अब जनि नाम ते, डारहि मोहिं वियोग ।
अगनित जनमन लौं भ्रम्यो, पायो संसृति शोग॥११७
श्रीसतगुरु सतसंग वल, पाय मिल्यो निज नाम ।
अब पल भरि न विसारिहौं,पाय परम सुदधाम॥११८
चिंतामनि चिंताशमन, कामधेनु सुर वाग ।
विभव विवरधन जानकी,जीवन नाम सुराग॥११९॥
रह्यो न कछु कर्त्तव्यता, जबहिं जप्यो जिय नाम ।
सामराज्य पद पायके, फेर न खटका दाम ॥१२०॥
सीताराम सुनामकी, कथा व्यथा हरि लेत ।
युगलानन्य अयाश विन, मुद मंगल दिल देत ॥१२१

❀ सोरठा ❀

सर्वोपर सुख धाम राम नाम सिय सहित वर ।
भजिए तजि कुल काम कालादिकहूँ से न डर ॥१२२
ज्ञान भक्ति वैराग्य वर, विज्ञान विचित्र तर ।
नाम मध्य एकतार सुमिरत स्वाद असंख्यधर॥१२३॥
सत सिद्धान्त अथाह रसना नाम रमन करन ।
अपर विषारी दाह हेतु सकल साधन शरन ॥१२४॥

रैन ऐन उत्साह सहित नाम रसना रमन ।
लहु जीवन फल लाह सब प्रकार संसृतिशमन॥१२५॥
अनुभव अमल अदाग विमल वाग विश्वास वल ।
लहे नाम अनुराग सहित गोप्य रस रहस थल॥१२६
युगलानन्य अजान महामंदतर कौन विधि ।
करै प्रभाव वयान नाम जहाँ थकि गए विधि ॥१२६
नामाराधन सार काहू भांतिन से करो ।
पावो प्रेम विहार निर्विकार गुन मन भरो ॥१२८॥

❀ दोहा ❀

बार बार उत्साह सजि दाह चाह बिसराय ।
जपिये श्रीसीतारमन नाम निशान बजाय ॥१२९॥
युगल नाम धन संचिये उभय भावना धारि ।
युगलानन्य अयाश विन, पाइए प्रीतम प्यारि ॥१३०
नाम परत्व प्रकाशमय, दोहा सुने जो कोय ।
तासु सफल मनकामना, नाम सुपद रुचि होय॥१३१
(इति श्रीप्रियतम प्रेम विवर्द्धिन्यां नाम प्रतापादि-निरूपनं नाम प्रथम परत्व)

भक्ति स्वरूप वर्णन

श्रीसीतावर विशद पद, कंज मंजु मन धारि ।
वरनो भक्ति स्वरूप फल, अति संक्षेप सुधारि ॥१॥
भक्ति विना फीके सकल, साधन योग विराग ।
सियवर मिलन सनेहवस, इह सिद्धान्त अदाग॥ २ ॥
श्रीगुरु वदन विवेक रस, पूरन पाय प्रसाद ।
वरनत वस्तु विचित्रतम, शमन अविद्या वाद ॥३॥
सद् ग्रंथनको सार सुचि, सुनत होय अहलाद ।
युगलानन्यशरन मिटे, मोह मलीन प्रमाद ॥४॥
कर्म ज्ञान वैराग्यकी, जहाँ न चाह कदापि ।
फल कदंब अभिलाष विन,भक्ति वदहिं थिरथापि॥५॥
प्रिय परतत्व परत्वको, बोध विशेष समेत ।
अचल नेह अति अमलतर,भक्ति सुभग सुख खेत॥६॥
भजन करत रुचि चाह युत, प्रगटत ज्ञान विराग ।
परम सूक्ष्म विज्ञान वर, ताते पर अनुराग ॥७॥
जेहि गुनगन वस सिय रमन, सहजहिं होत अधीन ।
कौन न सेवे श्रीभगति, सुपद सुवुद्धि प्रवीन ॥८॥
सिय वल्लभ अनुकूलता, भक्ति विचित्रता सोय ।
ता सम साधन साध्य नहिं,सकल शास्त्र मधिजोय॥९
त्रिधा भक्ति जिय जानिये, साधन साध्य सप्रेम ।
युगलानन्यशरन परम, दायक जन मन क्षेम ॥१०॥
वरनाश्रम निज धर्म शुभ, साधन सजि बहु काल ।
भक्ति होत सोई सुभग, साधन रूप विशाल ॥११॥
नित्य सिद्ध सद्भावको, कृपा कलित उर बोध ।
अचल परोक्ष विहीन शुभ, साध्या भक्ति विसोध॥१२
तीजी प्रेमा भक्तिको, सुनिये सुभग उपाय ।
जेहि पाये मुद ब्रह्महूँ, तुच्छ समान लखाय ॥१३॥
प्रथम सुभग श्रद्धा सुनो, गुन विहीन पन पीन ।
बहुरि संत सियकंत प्रिय, संग अभंग सदीन ॥१४॥
तिन सङ्ग तिलहिं भजन कल, क्रिया षष्ट बहु भाँति ।
सीखे प्रीति समेत नित, जेहि पावे नव कान्ति ॥१५॥
तदनंतर अनरथ न चय, निरस निहारे मीत ।
विलप करै सब भांतिसे, महाविघ्न विपरीत ॥१६॥
ता पाछे निष्ठा नवल, रुचि चाशक्ति स्वरूप ।
प्रगटत आकस्मात उर, दायक मोद अनूप ॥१७॥
बहुरि विलच्छन भाव वर, उदय होत अविकार ।
जासु रूप गुन अकथ अति,समुझहिं संत उदार॥१८
सकल मोदनिधि प्रेम पुनि, प्रगटत परम प्रकाश ।
जेहि पाये पावन परम, पद परसत रसराश ॥१९॥
या विधि क्रम ते प्रेम प्रिय, उपजत अमल अभंग ।
युगलानन्यशरन जहाँ, उठत उमङ्ग तरंग ॥२०॥
भजन अंग चौंसठ सरस, समुझि सुमन सुखखान ।
तामें पाँच परम सुभग, सुनिये नाम प्रधान ॥२१॥

(क्रमशः)

❀ प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी ❀

(रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

(गताङ्क ६, पेज २० से आगे)

दोहा :—

सिय वल्लभ सेवा कुशल अङ्ग अङ्ग प्रति प्रीति ।
भूशन वसन सजाय सुख स्वाद चखे मन जीति॥२२
लोक रिझावन निमित नहिं करै कबहुँ उपचार ।
सब सन सुचित बटोरिके सेवे इष्ट उदार ॥३३
श्रीमद्रामायन नवल चरित स्वाद नित लेय ।
सकल शास्त्र निंदा तजे इष्ट सुजस गुनि पेय ॥२४
सदा सजाती संग रस रंग सजे अनुकूल ।
सिद्ध विजाती संग नहिं बसे समुझि प्रतिकूल ॥ ५
सकल सार अविकार रस बरधन नाम पुनीत ।
रसना रटे सुप्रेम सजि तजि तम पंथ अनीत ॥२६
श्रीप्रमोदवन अवध मधि करे अखंडित वास ।
युगलानन्यशरण अपर देश बास दुख रास ॥२७
पाँच अंग अंगी सदृश साधन साध्य स्वरूप ।
युगलानन्य विचार विनु परत मतान्तर कूप ॥२८
बत्तिस सेवा अघ असत सयल समुझि गुरुपास ।
त्यागे पागे राम रस रागे रहस विभास ॥२९॥
दश अपराध अगाध दुख सागर भरित विकार ।
यतन जगाय नशाइये है अति अनहित कार ॥३०
सत निंदा प्रथमहिं अजर महा शोक प्रद जानु ।
सियवर से शंकर विषे भिन्न ईशता भानु ॥३१
श्रीसीतावर दास प्रिय पूज्य सुकुल अनुसार ।
समुझि सनेह सुधारिये तम कुतर्क व्यवहार ॥३२
तीजे श्रीगुरुदेव की आज्ञा करै निराश ।
सो पाँवर पातक निकर सहित न नाम प्रकाश ॥ ३३
चौथो श्रुति पथ निन्दनो करि बहु तर्क विवाद ।
युगलानन्यशरण लहे सो न सुनाम प्रसाद ॥३४
अर्थवाद परतत्त्व रस पूरन नाम निरूप ।
करे कलुष कोटिन अवश भाजन सो अघरूप ॥३५
पंचम अति अपराध इह येन केन विधि त्यागु ।
युगलानन्यशरण सहज नाम माँझ अनुरागु ॥३६
कृपा निधान सुनाम बल करे कलुष अनरीति ।
वस्तु विवेक विहीन पशु क्यों पावै परप्रीति ॥३७
जो अजान ते होय अघ लहु दीघ तेहि नाम ।
क्षमा करै संशय विगत ज्ञान पूर्व दुख दाम ॥३८
कतहूं नाम परत्व मधि लिख्यो न एतनो पाप ।
पापी नर करि सकत नहिं जितनो नाम प्रताप ॥३९
यामे जानो जात है अज्ञानता विशेषु ।
जातक पातक रुचि नहिं विज्ञहिं होत परेखु ॥४०
सावधान संयुत सदा सुमिरे नाम उदार ।
युगलानन्य अयास बिन उतरि जाय परपार ॥४१
छठो महा अघ अति जहर यतन समेत विसारु ।
युगलानन्यशरण विषय विपुल विहाय असारु ॥४२
योग यज्ञ जप तप नियम शम दम ज्ञान विराग ।
श्री सीत वर नाम सम मान न अति अघ दाग ॥४३
महाराज राजेशमनि नाम निखिल श्रुति सार ।
क्यों पटतर दीजे प्रजा इह सप्तम अघ खार ॥४४
चटक चाह वर वित्त ते हीन अदीन गँवार ।
लालच लगि उपदेशिवो नाम मंत्र गुन सार ॥४५
अष्टम अघ आमय असल समल करै मन मीत ।
ताते त्याग न योग्य नित निरखि महा विपरीत ॥४६
सहज सुभाव सुजन कहैं सुमिरो नाम कृपाल ।
पै रहस्य वरनन करन विन अधिकार कुसाल ॥४७

उत्तम मनि न गँवार कर दीजे कबहुँक मीत।
भाव भेद बूझे बिना बेचत विषय प्रतीत ॥४८
परम परत्त्व विचित्रतर नाम प्रभाव अपार।
सुनि सबविधि हरषत न हिय सो अघ दारुनभार॥४९
नवम महा संकट बिकट देन हार अपराध।
युगलानन्य सनेह बिनु पावत रोग असाध ॥५०
लंपट लोभी बाम गुन दाम सुनत पुलकात।
नाम महत्व परात्पर सुनि न नीच हरषात ॥५१
काम कोह ममता मलिन असत बासना बीच।
पचे नाम रस समुझ बिनु सो अघ कठिन कुमीच ॥
दशमपाप सुविचारकरि परिहरिये भ्रम त्यागि।
युगलानन्यशरण लहो पद अनुपम अनुरागि ॥५३
समता सब भूतन विषय कीजिय द्वेष विहाय।
हिंसा अवस न राखिये सब मधि राम रमाय ॥५४
दश अपराध असाध कुज जानि दीजिये छोड़ि।
युगलानन्य सुनाम जपु सब दिशि से मुखमोड़ि ॥५५
त्यागि अखिल अपराधको जपे जो नाम अखंड।
लहे लाह लालन प्रगट दहे वासना चंड ॥५६
उर उपजे अनुराग अब अनुभव मन बचपार।
ताते बिगत कषाय नित सुमिरिय नाम उदार ॥५७
सियवर द्रोही जीव को तीन लोक नहि ठौर।
पै केवल श्रीनाम बल बचे सुमति सह गौर ॥५८
नाम द्रोह कीन्हें न कहुँ होत उधार बिचारु।
ताते यतन जमात युत तजिये अघ अधिकारु ॥५९
सियवल्लभ पर रूप से नाम प्रताप विशेष।
गाथा विदित न गोप कछु लोक वेद सब देश ॥६०
नामी कौनिहुँ काल में प्रगटत हित जग जीव।
नाम प्रताप अखंड नित गाजत प्रापक पीव ॥६१
सरस सुलभसुख सहजप्रद अघ अनेक दहन कइकोट।
युगलानन्य बिसारि भ्रम लीजे नाम सुओट ॥६२
भक्तिरहस्य अगाध मत सत बरनहिं जेहि भांति।
सोऊ कछु सुनिये सुजन शमन सकल भवभ्रांति ॥६३
नवधा श्रुति भय विवश जो करत सनेह विहीन।
विधि वेधी वैधी भगति बरनहिं रसिक प्रवीन ॥६४
स्वाभाविक बिन वेदभय अचल अमल पर प्रेम।
काम रहित रागानुगा भक्ति प्रभा मनि हेम ॥६५
जामे साधन साध्यको वेद न तिल सम होय।
रागानुगा विलासिनी भक्ति कहावै सोय ॥६६
चार प्रकार स्वरूप तेहि प्रथम नाम लयलीन।
सुजस श्रवन संकल्प गत हेय दुराशा छीन ॥६७
परम ध्येयता ध्येय मधि तदाकार तद्रूप।
प्रीतम पुर बर बास नित सब साधन को भूप ॥६८
सुमिरन भाव समेत नित कीजे रूप बिचारि।
तिमि अरचन आदिक लखहुँ प्रेम प्रधान प्रचारि ॥
बिकल अंगहूँ भए पर भक्ति सकल फल देत।
अति दयालता सीम निज नेह निरत गुन लेत ॥७०
उभय नैन निज मूंदि के चलिये भजन सुराह।
तऊ न तिल पातन कबहुँ भक्ति प्रभाव अथाह ॥७१
श्रवन मात्र से सुदृढ़तर भक्ति उदय हिय होत।
अधिक परिश्रम श्रुति मनन किये ज्ञान उद्योत ॥७२
ज्ञान विमल विज्ञान को फल श्री भक्ति सनेह।
युगलानन्य सुसमझ बिन बादहिं फाँकत खेह ॥७३
सद् ग्रन्थनको श्रवन करु प्रथम सनेह सुधारि।
बहुरि नाम रस रूप में मगन होय पन धारि ॥७४
वस्तु अपूरब दृग निरखि तथा श्रवन करि मीत।
सहज सनेह उदय हृदय निर्विकार निज प्रीति ॥७५
ताके मिलन निमित्त कछु कीजे श्रवन सुग्रन्थ।
भाव चाव प्रिय पुष्टकर दरसत प्रियतम पंथ ॥७६
भजन पंच बिधि विदित बर शंतत संत समीप।
अपर रहस महरम नहीं करन तिमिर को दीप ॥७७
प्रथम भावमय द्वितिय सतभाव न जी की जानु।
तीजो भाव अनुकूलता मृदु मानसमधि मानु ॥७८

(क्रमशः)

प्रियतम प्रेम प्रवर्द्धिनी

(रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित)

(गतांक १० पृष्ठ २२ से आगे)

दोहा :—

चौथो भाव विरोध बिनु पंचम लखु प्रतिकूल।
युगलानन्यशरन सकल लखे खपे भवभूल ॥७६॥
दास्य सख्य वत्सल रुचिर रसनायक सुखसार।
भव्य भावमय मानिये तजि सु प्रपंच असार ॥८०॥
श्रीगुरु पद पंकज कृपा पाय मंत्र निज नाम।
सुमिरन भजन मनन निरतविगतकामवसुजाम ॥८१
सियवर सरस सनेह रस लीन संत सुख पुंज।
गुनगन लीला लाय हित सहित निरूपन कुँज ॥८२
श्रीपरेश परिकर विषे शंतत भाव उदार।
भजन भाव संबंध निज उभय बीच निर्द्धार ॥८३॥
सियपिय मिलन उछाह उर धारि विविध व्रत नेम।
भोग वासना त्याग तिमि तप जप योग सुछेम ॥८४
श्रीतुलसी अश्वत्थवर वृच्छ करन नित सेव।
इहै भाव अनुकूल निज जानहिं सज्जन भेव ॥८५
श्रीजानकी रमन मधुर मुद्रा नाम उपेत।
प्रिय प्रसाद दासादिको धारन प्रेम समेत ॥८६॥
अवध विभूति विचित्र तर ध्यान निरंतर गान।
भाव विरोध रहित निखिल परम प्रभा मुदखान ॥८७
कर्म सकाम मिलित सकल साधन लखु प्रतिकूल।
भजन भाव रत जननको उचित न करन कबूल ॥८८
रागानुगा सुभक्ति मधि अपर उपाय निरास।
केवल प्रेम प्रधान तहँ नामादिक रुचि खास ॥८९
श्रीरघुनंदन संत वर रसिक कृपा ते रंग।
चढ़त सुसाधन किये पर भाव भक्ति सत संग ॥ ९०
ताको लच्छन प्रगट पुनि इतनो दरसत नैन।
सहज शांति मुदमान गुन रहित एक रस चैन ॥ ९१
व्यर्थ काल बीते नहीं बिना भजन सियराम।
विमल विरागअदाग अति सतआसा अभिराम ॥९२
उत्कण्ठा प्रीतम मिलन नाम गान रुचि नीक।
आशक्ती प्रियगुन मनन प्रीति धाम अविलीक ॥९३
इत्यादिक अनुभाव वर होत उदय जन हीय।
भाव बीज अंकुर लखब प्राप्त हेतु सिय पीय ॥ ९४
दृग गोचरकी योग्यता तासु भली विधि होय।
मिले सियावर याहि तन संशय रती न कोय ॥९५॥
भाव भक्ति परपक्व पर प्रेम दशा प्रगटाय।
तासु चिन्ह सुनिये सुजन सदमत सरस सोहाय ॥९६
विपुल विघ्न व्यापित भए रंचक होय न खेद।
प्रतिदिन आशा नेहकी अधिक रहित निर्वेद ॥९७॥
ममता प्रीतम प्रेम मधि निचय निरीह अकाम।
सरस सनेह सोई सुभग पूरकपन अभिराम ॥९८॥
तासु अंक द्रवता शतत चित्त निविड़ रस एक।
रुच्छ परस बिन सिथिल तन अनुछन नेहसुटेक॥९९
ता पीछे नव राग वर लच्छन तासु विचित्र।
सिय पिय सह दुख सुख सहस रहित मोद दुख मित्र
सुख समूह सियराम बिनु महा दाह कर जानु।
दुख प्रीतम संयुत सहस कोटि हरष पहिचानु ॥१०१
तदनंतर पावन प्रनय प्रगटत प्रेम निकेत।
लच्छन दृढ़ विश्वास उर छोड़ि लौकिकी हेत ॥१०२
संभ्रम हीन सनेह सन रसिक हृदय फुर होत।
अपर मुमुच्छुन चित्तमें ततसम नहिं उछोत ॥१०३
भाव अंक जो लखि परे तौ प्रतिबिंब न भाव।
समुझे रसिक अनन्य भल भेद विवरधित चाव ॥१०४

अज्ञानी उर भाव को छाया छली निहारु।
अचल रहत नहिं बोध बिनु भलीभांति निर्द्धारु॥१०५
थाई भाव सु रस लहत अनुभावादिक योग।
पुनि प्रगटत बल्लभ बिभव बाग बिहार सुभोग॥१०६
जेहि मधि भाव निरूपिये ध्येय मान सब भांति।
विषयालंब बिभाव से झलकत नूतन कांति॥१०७॥
आश्रय आलंबन रशिक पाँच प्रकार विचारु।
उत्तरोत्तर रस श्रेष्ठता शांतादिक अवधारु॥१०८॥
सियवर सुन्दर रूपगुन सुमिरावन अनयास।
भूशन वसन सुघन छटा गान तान सुखखास॥१०९
उद्दीपन बहु जानिये रितु अनुकूल निहारि।
विमल विभाव विचारु चित नेह हेतअवधारि॥११०
भाव लखावे सत्य सब सो समुझहु अनुभाव।
नृत्य गीत मुशक्यान मृदु चलन अनूपम राव॥१११
अपने अपने रसन के लायक लखु अनुभाव।
जिय जागत जाके सो धनि भाग्यमान सबठांव॥११२
चित्र क्षोभ प्रद मानिये सात्विक भाव अजूब!
खेद कंप आँशू विमल विवरन हाय हबूब॥११३॥
पुलके गात रोमांच युत गदगद गिरा गंभीर।
सु स्तंभन अष्टम प्रलय प्रान त्याग लौ पीर॥११४
पाँच भेद इनमें लखहु धरि उर प्रेम प्रचार।
बड़भागी को प्राप्त सो है अति अगम अपार॥११५
धूमायिता सु प्रथम लखु ज्वलिता द्वितीय विचारु:
तिमि दीप्ता तीजी लखा उद्दीप्ताहि निहारु॥११६
पंचम जानु सु दीपता लच्छन समुनि निरूप।
समुझे सुधी सचेत चित कढ़ितम दुर्मति कूप॥ १७
उत्तम पाँचो एक से एक तदपि कछु बीच।
जानहिं बुधव्यवहार बिनु लखहिं न मानसनीच॥११८
ए सब थाई भाव मधि प्रगटत दिग्धा जानु।
रति युत नेही के हृदय उदय सचिक्कन भानु॥११९
भावशून्य हिय प्रगट पर रुच्छ दशा अवधारु।
मुक्त चाह बालन हृदय रत्याभास सम्हारु॥१२०
कर्मीजन विषयी हृदय सत्वाभासज जानु।
पिच्छल चित्त समेत उरश्रम भव प्रगट पछानु॥१२१
इन सबकी गति गोप्यवर भाव भजन हिय बीच।
प्रगट लखाई परत नित लखे न मायिक कीच॥१२२
संचारी तेंतीस लखु समय समय अनुकूल।
कृपाविवश उरसंचरहिं शमि सब संसृतिशूल॥१२३
निज निंदा निर्वेद अनुताप विषाद गलान।
आतममध्य अयोग्यता मति दीनता पचान॥१२४
दुर्बल वपु श्रम मद अधिक शंका त्रास उदास।
उद्वेगरु उनमादता अपसृति हिय ह्रास॥१२५
तन मन बच आलस तथा जड़ता लाज उपाधि।
युगलानन्य वियोग वश संभव बहुतक व्याधि,॥१२६
अविहित्था सुस्मरन तिमि तर्क सुचिंता चित्त।
मति धृति हरषा नंद उर उत्कंठा अनिमित्त॥१२७
उग्रभाव बिन वासना थिरता सूया जान।
चंचलता निद्रा स्वपन जागृति सदृढ़ प्रमान॥१२८
अपर माँझ निःसत्व इह द्वेषिन बीच प्रतीप।
युगलानन्य सनेह मधि महा मोदमय दीप॥१२९
पोषक थाई भावको संचारी जिय जानु।
रशिक चित्त अनुशार ही प्रगटत मनमधि मानु॥
सागर सम नन मांझ नहिं प्रगट लखाई देत।
कबहुँ कबहुँ रंचक कछुक उदय होत सुखकेत॥१३१
शांत भक्त उर शांति शुभ दास्य भाव मधि प्रीति।
सख्य बीच विश्वास वर तजिके अविहित रीति॥
वात्सल्य रस बीच वर वत्सल थाई स्वच्छ।
रस नायक मधि मधुरता प्रियता परम प्रतच्छ॥
विभावादि संयुत सरस थाई होत विशेष।
पांचो मधि इह रीति लखु परिहरु लौकिक द्वेष॥
श्रीसीतावर रशिक जन कथा अकथ कहे कौन।
सब साधन फल निदरि जिन पायो रहस अगौन॥१३५

(क्रमशः)

❀ प्रियतम-प्रेम-प्रवर्द्धिनी ❀

(रसिकाचार्य अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज-विरचित)

(गतांक ११, पृष्ठ २४ से आगे)

दोहा :—

रशिकाई कथनी सुलभ, दुर्लभ करनी प्यार ।
श्रीसियस्वामिनि कृपासे लहे कोउ जन अधिकार।१३६
सकल भाव रस अगम तर रसय अतीव विचारु ।
युगलानन्य सुगोप्य करि पाइय प्रभा अपारु ॥१३७
श्रीरघुपति परमात्मा मानि सुदृढ़ जन शांत ।
सेवा रस लयलीन नित दास्य भाव बिन भ्रांत॥१३८
भ्रम विहीन सेवन सरस यथा भाव रस मित्र ।
वात्सल्य मधि नेह अति उज्वल रसग विचित्र॥१३९
सर्वस सौंपि सनेह सह सुख वरधन नृप लाल ।
रस भूपति सिय स्वामिनि कृपा कटाक्ष रसाल॥१४०
सर्वोपर शृङ्गार रस रसनिधि प्रीतम प्रान ।
युगलानन्यशरन शतत चाहत प्रेम प्रधान ॥१४१॥
महिमा श्री रसराज की वरनहिं युगल सप्रेम ।
हैं दोऊ शृंगार रस सूरति प्रद सद क्षेम ॥१४२॥
मधुर महा रस की कथा सुनत व्यथा रति रुच्छ ।
युगलानन्यशरन नसे वसे भावना स्वच्छ ॥१४३॥
एहि प्रकार रस भक्ति वर समुझि सनेह समेत ।
पावै परम रहस्य थल अति समीप जस केत॥१४४॥
बहुत भाँति श्रीभक्ति मधि भेद वेद विस्तार ।
युगलानन्यशरन कह्यो अति संक्षेप सँवार ॥१४५॥
सगुना अगुना भेद द्वै तथा एकासी भेद ।
श्रीगुरु मुख से जानिये परिहरि पंचज खेद ॥१४६
घन तरला अरु व्यूह बहु भाँति विकल्प विलास ।
नेमा क्षमा तथा सुहृद विषय संग राभास ॥१४७॥
तिमि उत्साह मयी तथा तरंग रंगिनी जानु ।
भजन क्रिया षट भाँतिकी वरने रशिक सुजानु॥१४८
त्रिगुनमयी सगुना लखब अगुना गुनन विहीन ।
दिव्य भव्य गुनमयी सो महा मोद रस लीन॥१४९॥
निष्ठा रति अरु भाव तिमि प्रेम अनेम अजूब ।
चारि अंग अगुना विषे जानहिं बुध जन खूब॥१५०
सब साधन सुचि साध्य में नाम भजन सत सार ।
सहज अकाम सप्रेमनित विषय विकार विसार॥१५१
युगलानन्य उपाय बहु सधन योग्य नहिं एक ।
ताते सियवर नाम को अचल सुजन हिय टेक॥१५२
भक्ति भाव बहुधा रशिक बरनहिं शौक समेत ।
सो सद सुगम सुनाम रस चाखत स्वाद सचेत॥१५३
नाम रटन विन रहस रस कौन पचावन योग्य ।
युगलानन्य विचारि चित त्यागिय अपर कुभोग्य१५४

(इति श्री भक्तिरहस्यं द्वितीयम्)

❀ अथ धाम-परत्व-वर्णन ❀

रे मन देश विहाय सब जानि भजन प्रतिकूल ।
अचल वास श्राधाम मधि कीजे प्रिय अनुकूल ॥१॥
धामी मोद विनोद रस रूप सुभाव प्रभाव ।
धाम निवास विना अगम सुगम धाम गुनगाव॥२॥

निखिल ईश निर्वान वर वैभव विशद त्रिनोद ।
अवधि अवध अनवधि अजय अमल अनूप प्रमोद॥३

निराकार श्रुति जेहि वदत न्यामक अग जग बीच ।
सो प्रकाश श्रीअवधपुर जानहिं सुबुध अकीच ॥४॥

नित्य केलिमय मन रसन श्रीशाकेत निकेत ।
सकल लोक वंदित शतत प्रियतम कृपा निकेत ॥५॥

श्रीसरजू पर प्रेम प्रिय पावन पाथ प्रवाह ।
दरस परस मज्जन करत हरत अमित भवदाह ॥६॥

सुधा सुधा सम कटुक रस अखिल स्वाद घुर घास ।
जब जागत जिय जौक श्री सरयू सजल पिपास ॥७॥

श्रीप्रमोद वन सघन शत सहस कुंज सु निकुञ्ज ।
लली लाल निज केलि थल रसिक मधुप गन गुञ्ज॥८

अमित दिवाकर तेज तर तारापति दुति वृंद ।
लखि श्रीधाम प्रकाश को सकुचहिं लखि रसकंद॥९॥

महा मनिनमय छिति झकझक छलकत छटा अपार ।
युगलानन्यशरन कृपा विवस धाम दीदार ॥१०॥

विना विमल वर भाव श्रीनाम उचारन हीन
सपनेहूँ शाकेत छवि लखि नहिं परत प्रवीन ॥११॥

इष्ट मौज मादक मधुर मधुथल अवध सुधाम ।
युगलानन्य प्रपंच तजि भजिये आठो याम ॥१२॥

विमला श्रीशाकेतपुर अमर लोक सत लोक ।
अवध सुभग सत्या सरस अपराजिता अशोक ॥१३॥

ब्रह्मलोक पुनि परम पद पर बैकुण्ठ सु सीस ।
इत्यादिक बहुनाम श्रीअवध वदत अघ खीस ॥१४॥

सकल सुखन की खानि सुचि समुझ अयोध्या धाम ।
युगलानन्यशरन समुद वसिये होय अकाम ॥१५॥

विथरे चिथरे अवध वर वीथिन पावन सार ।
होय हिये उन्मत्त कब हौं धारिहौं स प्यार ॥१६॥

सब आशा तजि एक रस बसिहौं धाम अडोल ।
युगलानन्य न धारिहौं कबहूँ मन मद लोल ॥१७॥

सकल सनेहिन से सदा कब कहिहौं वर वैन ।
हे प्यारे बसिये समुद धाम पाय चित चैन ॥१८॥

धामी मोद विनोद नहिं कोटिन कलप प्रयन्त ।
जौं लौं संयत धाम नहिं तजि मायादि वसंत ॥१९॥

सीताराम प्रसन्नता कारन धाम न आन ।
युगलानन्य सप्रेम नित करु सरजू जल पान ॥२०॥

वापी कूप तड़ाग वर वाग विहंग सुरंग ।
पशु पक्षी अग जग सकल धामी विभव अभंग॥२१

कर पद वचन रचन असत गहत गमन करि नास ।
धाम निवास प्रकाश कर प्रगट न देह विनाश ॥२२॥

वार वार रसना सुभग लीजे धाम सुनाम ।
श्रीसरजू संयुत सरस छोड़ि विवाद कलाम ॥२३॥

चित्रकूट श्रीअवध वा मिथिला मधि करु वास ।
शंतत समता तीनहूँ अंगी अंग विलास ॥२४॥

श्रीसरजू मंदाकिनी कमला एक स्वरूप ।
भेद भावना रचत उर परत मोह तम कूप ॥२५॥

श्रीसियवर निज मुख कही बानी विमल विशाल ।
कामद गिरिवर सुजसतर अवध समान रसाल ॥ ६

ताते रे मन कतहुँ रहु तीन ठौर मे मीत ।
अपर सदन अध उर्द्ध हूँ दुख शत लखु विपरीत ॥२७

युगलानन्यशरन हृदय हरषत अधिक हमेश ।
श्रीकामद गिरिराज लखि युगल सनेहावेश ॥२८॥

नित्य विहार सुथल ललित चित्रकूट रस ऐन ।
मरमी जन जानहिं मरम वकहिं अपर बहु वैन॥२९॥

चरन चिन्ह सियवर विशद जहाँ तहाँ दरसात ।
जेहि विलोकि मानसअमल भाव भजन विपुलात॥३०

जय जय श्रीशाकेतपुर गिरवर मिथिला धाम ।
उचरत नाम अनाम गुन उर झलकत अभिराम॥३१

तिहुँ थल श्रीसीता रमन अनुपम केलि कलोल ।
बड़भागी रागी रसिक निरखहिं भाव अलोल॥३२॥

अवध बीच लीला उभय गुप्त प्रगट सब भाँति ।
श्रीकामद गिरिराज बिच विलसत रहस सुकांति॥३३

श्रीविमला वैभव अकथ श्रुति नित नेति पुकार ।
मिथिलापुर आनंद घन कामद सुगुन अपार ॥३४॥

नमो नमो श्रीअवधपुर नमो नमो गिरिराज ।
नमो नमो श्रीजनकपुर सरसानन्द समाज ॥३५॥

श्रीमिथिला गिरिराज श्रीअवध धाम अभिराम ।
इन सन प्रीति बढ़ाइये तजि मन मोह मोकाम ॥३६॥

इति तृतीय रहस्यम् (क्रमशः)